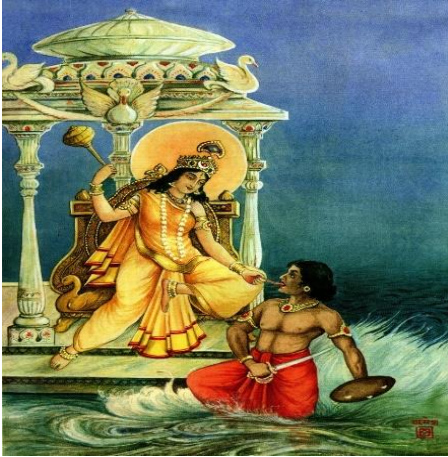


## ॥ ८ - बगलामुखी महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

### अनुक्रमाणिका

1. देवी बगलामुखी	02	11. बगलामुखी पञ्जर न्यास स्तोत्रम्	23
2. बगलामुखी माता मंत्र	04	12. बगलामुखी कवचम् - १	23
3. माता ध्यान	07	13. बगलामुखी कवचम् - २	24
4. बगलामुखी दशनाम स्तोत्रम्	08	14. बगलामुखी कवचम् - ३	26
5. बगलामुखी स्तोत्रम्	09	15. बगलामुखी शत्रु विनाशकं कवचम् - ४	27
6. बगलामुखी हृदय स्तोत्रम् - १	11	16. बगलामुखी सुक्तम्	28
7. बगलामुखी हृदय स्तोत्रम् - २	13	17. विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम्	30
8. बगलामुखी स्तोत्रम्	16	18. महा विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम्	32
9. बगलामुखी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्	18	19. बगलामुखी चालीसा	39
10. बगलामुखी पञ्जर स्तोत्रम्	20	20.	

### माँ बगलामुखी



### माँ बगलामुखी यन्त्र





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

## ॥ माँ बगलामुखी ॥

देवी कमला दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं। व्यष्टिरूप में शत्रुओं को नष्ट करने की इच्छा रखनेवाली तथा समष्टिरूप में परमात्मा की संहार शक्ति ही वगला है। देवी बगलामुखी स्तंभव शक्ति की अधिष्ठात्री हैं। यह अपने भक्तों के भय को दूर करके शत्रुओं और उनकी बुरी शक्तियों का नाश करती हैं। माँ बगलामुखी का एक नाम पीताम्बरा भी है। ये पीतवर्ण के वस्त्र, पीत आभूषण तथा पीले पुष्पों की ही माला धारण करती हैं। इनके एक हाथ में शत्रु की जिह्वा और दूसरे हाथ में मुद्गर है।

स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार भगवती वगलामुखी के प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है- सत्ययुग में सम्पूर्ण जगत्को नष्ट करनेवाला भयंकर तूफान आया। प्राणियों के जीवन पर आये संकट को देखकर भगवान् महाविष्णु चिन्तित हो गये। वे सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप जाकर भगवती को प्रसन्न करने के लिये तप करने लगे। श्री विद्या ने उस सरोवर से वगलामुखी रूप में प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिया तथा विध्वंसकारी तूफान का तुरन्त स्तम्भन कर दिया। वगलामुखी महाविद्या भगवान् विष्णु के तेज से युक्त होने के कारण वैष्णवी है। मंगलवार युक्त चतुर्दशी की अर्धरात्रि में इनका प्रादुर्भाव हुआ था।

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में 'विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्' कहकर उसी शक्ति का समर्थन किया है। तन्त्र में वही स्तम्भन शक्ति वगलामुखी के नामसे जानी जाती है।

श्री वगलामुखी को 'ब्रह्मास्त्र' के नाम से भी जाना जाता है। ऐहिक या पारलौकिक देश अथवा समाज में दुःखद् अरिष्टों के दमन और शत्रुओं के शमन में वगलामुखी के समान कोई मन्त्र नहीं है। इनके बडवामुखी, जातवेदमुखी, उल्कामुखी, ज्वालामुखी तथा बृहद्भानुमुखी पाँच मन्त्रभेद हैं।

श्रीकुल की सभी महाविद्याओं की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता पूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक करते रहना चाहिये। इसमें ब्रह्मचर्य का पालन और बाहर-भीतर की पवित्रता अनिवार्य है।

सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने वगला महाविद्या की उपासना की थी। ब्रह्माजी ने इस विद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को किया। सनत्कुमार ने देवर्षि नारद को और नारद ने सांख्यायन नामक परमहंस को इसका उपदेश किया। सांख्यायन ने छत्तीस पटलों में उपनिबद्ध वगलातन्त्र की रचना की। वगलामुखी के दूसरे उपासक भगवान् विष्णु और तीसरे उपासक परशुराम हुए तथा परशुराम ने यह विद्या आचार्य द्रोणको बतायी।

संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं माता बगलामुखी शत्रुनाश, वाकसिद्धि, युद्ध, कोर्ट-कचहरी एवं वाद विवाद में विजय, हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए, सरकारी नौकरी के लिए दैवी प्रकोप की शान्ति, धन-धान्य के लिये पौष्टिक कर्म एवं आभिचारिक कर्म के लिये भी इनकी उपासना की जाती है। इस विद्या को ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है। इनकी उपासना में हरिद्रा माला, पीत-पुष्प एवं पीतवस्त्र का विधान है।

कृष्ण और अर्जुन ने महाभारत के युद्ध के पूर्व माता बगलामुखी की पूजा अर्चना की थी। जिसकी साधना सप्तऋषियों ने वैदिक काल में समय समय पर की है।

- मुख्य नाम : बगलामुखी ।
- अन्य नाम : पीताम्बरा (सर्वाधिक जनमानस में प्रचलित नाम), श्री वगला ।
- भैरव : मृत्युंजय ।
- भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : कूर्म अवतार ।
- तिथि : वैशाख शुक्ल अष्टमी ।
- कुल : श्रीकुल ।
- दिशा : पश्चिम ।
- स्वभाव : सौम्य-उग्र ।
- तीर्थ स्थान या मंदिर : भारत में तीन प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर माने गए हैं दतिया (मध्यप्रदेश), कांगड़ा (हिमाचल) तथा नलखेड़ा जिला शाजापुर (मध्यप्रदेश) में हैं ।
- कार्य : सर्व प्रकार स्तम्भन शक्ति प्राप्ति हेतु, शत्रु-विपत्ति-निर्धनता नाश तथा कचहरी (कोर्ट) में विजय हेतु ।
- शारीरिक वर्ण : पीला ।
- विशेषता : ब्रह्मास्त्र एवं त्रैलोक्य स्तम्भनी विद्या ।



## ॥ बगलामुखी माता का मंत्रः ॥

- हल्दी या पीले कांच की माला से ८, १६, २१ माला मंत्र का जाप कर सकते हैं।
- इस मंत्र का जाप रात्रि में १० से ४ के बीच में करें।
- साधना के दौरान पीले वस्त्र धारण करें साधना के दिनों में बाल ना कटवाएं, ब्रह्मचर्य का पालन करें और केवल एक समय ही भोजन करें। सात्विक भोजन करें तो और भी अच्छा है।
- इस विद्या का उपयोग केवल तभी किया जाना चाहिए जब कोई रास्ता ना बचा हो।
- नोट : बगलामुखी महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्यूकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
- बीज मंत्र **ह्रीं।** दक्षिणाम्राय का है, जिसे स्थिर माया भी कहा जाता है।
- अग्नि बीज सहित मंत्र **ह्र्वीं।**
  - विनियोग एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः बगलामुखी देवता, लं बीजं, ह्रीं (हूं) शक्तिः, कीलकम्, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
  - षडङ्गन्यास ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ हूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।
  - ऋष्यादि न्यास श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। लं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये (हूं शक्तये) नमः पादयोः। ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अङ्गुली।
  - करन्यास ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ हूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।
  - जप संख्या १ लाख - जप, दशांश - पीत पुष्पों से होम, तद्दशांश - गुडोदक से तर्पण।
- त्र्यक्षर मंत्र ॐ ह्रीं ॐ।
- चतुरक्षरी मंत्र ॐ आं ह्रीं क्रों।
- पंचाक्षरी मंत्र ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।
- सप्ताक्षर मंत्र ह्रीं बगलायै स्वाहा।
- अष्टाक्षर मंत्र ॐ आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा। सांख्यायन तंत्र
  - ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रों बगला। बगला कल्पतरु
- एकोनविंशाक्षर मंत्र श्री ह्रीं ऐं भगवति बगले में श्रियं देहि दहि स्वाहा। वाच्छाकल्पद्रुम
  - ॐ ह्रीं ऐं भगवती बगले में श्रियं देहि दहि स्वाहा।
  - समस्त ऐश्वर्यो एवं सम्पत्तियों की प्राप्ति हेतु। बंद व्यापार, डूबा धन

- त्रयविंशाक्षर मंत्र                      ॐ ह्रीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा ।
- बगला गायत्री                      ॐ ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन बाणाय धीमहि तन्नः बगलाप्रचोदयात ।
- मंत्र                      ॐ ह्रीं बगलामुखी देव्यै ह्रीं ॐ नमः ।
- भयनाशक मंत्र                      ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं बगले सर्व भयं हरः ।
  - पीले रंग के वस्त्र और हल्दी की गांठें देवी को अर्पित करें ।
  - पुष्प, अक्षत, धूप दीप से पूजन करें।
  - रुद्राक्ष की माला से 6 माला का मंत्र जप करें ।
  - दक्षिण दिशा की ओर मुख रखें ।
- शत्रु नाशक मंत्र                      ॐ बगलामुखी देव्यै ह्रीं ह्रीं क्लीं शत्रु नाशं कुरु ।
  - नारियल काले वस्त्र में लपेट कर बगलामुखी देवी को अर्पित करें ।
  - मूर्ती या चित्र के सम्मुख गुगुल की धूनी जलाये ।
  - रुद्राक्ष की माला से 5 माला का मंत्र जप करे ।
  - मंत्र जाप के समय पश्चिम कि ओर मुख रखें ।
- नजर, जादू-टोना नाशक मंत्र                      ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पीताम्बरे तंत्र बाधां नाशय नाशय ।
  - आटे के तीन दिये बनाये व देसी घी डाल कर जलाएं ।
  - कपूर से देवी की आरती करें ।
  - रुद्राक्ष की माला से 7 माला का मंत्र जप करें ।
  - मंत्र जाप के समय दक्षिण की ओर मुख रखें ।
- परीक्षा में सफलता का मंत्र                      ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं बगलामुखी देव्यै ह्रीं साफल्यं देहि देहि स्वाहाः ।
  - बेसन का हलवा प्रसाद रूप में बना कर चढ़ाएं ।
  - देवी की प्रतिमा या चित्र के सम्मुख एक अखंड दीपक जला कर रखें ।
  - रुद्राक्ष की माला से 8 माला का मंत्र जप करें ।
  - मंत्र जाप के समय पूर्व की ओर मुख रखें ।
- संतान की रक्षा का मंत्र                      ॐ हं ह्रीं बगलामुखी देव्यै कुमारं रक्ष रक्ष ।
  - देवी माँ को मीठी रोटी का भोग लगायें ।
  - दो नारियल देवी माँ को अर्पित करें ।
  - रुद्राक्ष की माला से 6 माला का मंत्र जप करें ।
  - मंत्र जाप के समय पश्चिम की ओर मुख रखें ।

## ■ लम्बी आयु का मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ब्रह्मविद्या स्वरूपिणी स्वाहाः ।

- पीले कपड़े व भोजन सामग्री आटा दाल चावल आदि का दान करें ।
- मजदूरों, साधुओं, ब्राह्मणों व गरीबों को भोजन खिलायें ।
- प्रसाद पूरे परिवार में बाँटे ।
- रुद्राक्ष की माला से 5 माला का मंत्र जप करें ।
- मंत्र जाप के समय पूर्व की ओर मुख रखें ।

## ■ बल प्रदाता मंत्र

ॐ हुं हां ह्रीं देव्यै शौर्यं प्रयच्छ ।

- पक्षियों को व मीन अर्थात् मछलियों को भोजन देने से देवी प्रसन्न होती है
- पुष्प सुगंधी हल्दी केसर चन्दन मिला पीला जल देवी को को अर्पित करना चाहिए
- पीले कम्बल के आसन पर इस मंत्र को जपें.
- रुद्राक्ष की माला से 7 माला मंत्र जप करें
- मंत्र जाप के समय उत्तर की ओर मुख रखें

## ■ सुरक्षा कवच का मंत्र

ॐ हां हां हां ह्रीं बज्र कवचाय हुम् ।

- देवी माँ को पान मिठाई फल सहित पञ्च मेवा अर्पित करें ।
- छोटी छोटी कन्याओं को प्रसाद व दक्षिणा दे ।
- रुद्राक्ष की माला से 1 माला का मंत्र जप करें ।
- मंत्र जाप के समय पूर्व की ओर मुख रखें ।

## ■ मंत्र

ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-बाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् ।

## ■ चतुस्त्रिंशदक्षर मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व-दुष्टानाम् वाचं मुखं पदं स्तम्भय ।

जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

## ■ षट् त्रिंशदक्षर मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व-दुष्टानाम् वाचं मुखं पदं स्तम्भय ।

जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

- इस मंत्र का पुरश्चरण 1 लाख जप है । जपोपरांत चंपा के पुष्प से दशांश होम करना चाहिए । इस साधना में पीत वर्ण की महत्ता है । इंद्रवारुणी की जड़ को सात बार अभिमंत्रित करके पानी में डालने से वर्षा का स्तम्भन होता है । सभी मनोरथों की पूर्ति के लिए एकांत में 1 लाख बार मंत्र का जप करें । शहद व शर्करायुत तिलों से होम करने पर वशीकरण, तेलयुत नीम के पत्तों से होम करने पर हरताल, शहद, घृत व शर्करायुत लवण से होम करने पर आकर्षण होता है ।



## ॥ माँ बगलामुखी ध्यान ॥

- द्विभुजी बगला ध्यानम्

मध्ये सुधाब्धि मणि मंडप रत्न-वेद्यां,  
सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम् ।  
पीताम्बरा भरणमाल्य विभूषितांगीम्,  
देवीन् नमामि धृत मुद्र वैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥  
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीम्, वामेन शत्रून् परि-पीजयन्तीम् ।  
गदाऽभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराद्यां द्वि-भुजां नमामि ॥ २ ॥
- ध्यानम्

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थितां ।  
त्रिशूलं पान पात्रं च गदा जिह्वां च विभ्रतीम् ॥  
बिम्बोष्ठी कंबुकण्ठीं च सम पीन पयोधरां ।  
पीताम्बरां मदाधूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्व देवताम् ॥
- चतुर्भुजी बगला ध्यानम्

सौवर्णासन-संस्थितां त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लसिनीम्,  
हेमाभाग-रूचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम् ।  
हस्तैर्मुद्र पाश-वज्र-रसना सम्बि भ्रति भूषणै,  
व्याप्तांगी बगलामुखी त्रि-जगतां सस्तम्भिनौ चिन्तयेत् ॥
- चतुर्भुजी बगला ध्यानम्

वन्दे स्वर्णाभ-वर्णा मणि-गण-विलसद्धेम- सिंहासनस्थाम् ।  
पीतं वासो वसानां वसु - पद - मुकुटोत्तंस- हाराङ्गदाद्याम् ॥  
पाणिभ्यां वैरि-जिह्वामध उपरि-गरदां विभ्रतीं तत्पराभ्याम् ।  
हस्ताभ्यां पाशमुच्चैरध उदित-वरां वेद-बाहुं भवानीम् ॥
- ध्यानम्

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वेश्वानरः शीतति ।  
क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥  
गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद् यन्त्राणा यंत्रितः ।  
श्रीनित्ये बगलामुखिः प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः ॥
- ध्यानम्

ॐ पीतशंख गदाहस्ते पीतचन्दन चर्चिते ।  
बगले मे वरं देहि शत्रु संघ विदारिणी ॥
- ध्यानम्

ॐ सुवर्णा भरणां देवि पीतमाल्याम्बरावृताम् ।  
ब्रह्मास्त्रविद्यां बगलां वैरिणां स्तम्भिनीं भजे ॥

## ॥ माँ बगलामुखी दशनाम स्तोत्रम् ॥

- माँ पीताम्बरा राजराजेश्वरी भगवती बगलामुखी के अत्यन्त गोपनीय दस नामो वाल यह दिव्य दुर्लभ स्तोत्र हैं। इस स्तोत्र की फलश्रुति के अनुसार जो साधक शत्रुमुख स्तम्भनकरी बगलामुखी माँ के इस स्तोत्र का पाठ करता है वह देवी पुत्र होता हैं, मन्त्र सिद्ध होता हैं।
  - बगला सिद्धविद्या च दुष्टनिग्रहकारिणी ।  
स्तम्भिन्याकर्षिणी चैव तथोच्चाटनकारिणी ॥  
भैरवी भीमनयना महेशगृहिणी शुभा ॥ ॥ १ ॥
  - दशनामात्मकं स्तोत्रं पठेद्वा पाठयेद्यदि ।  
स भवेत् मन्त्रसिद्धश्च देवीपुत्र इव क्षितौ ॥ ॥ २ ॥
  - अज्ञात्वा कवचं देवि यो भजेद् बगलामुखीम् ।  
शस्त्राघातामवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ॥ ३ ॥

## ॥ माँ बगलामुखी स्तोत्रम् ॥

- चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं  
लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् ।  
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वांचलां स्मरामि  
बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्तम्भिनीम् ॥

॥ १॥
- पीयूषोदधिमध्यचारुविलद्रक्तोत्पले मण्डपे  
सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।  
स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रतीमित्थं  
ध्यायति यान्ति तस्य सहसा सद्योऽथ सर्वापदः ॥

॥ २॥
- देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलीन्भक्त्या  
वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ।  
पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद्वीजं स्मरेत्पार्थिवं  
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात् ॥

॥ ३॥
- वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति  
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।  
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः  
श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥

॥ ४॥
- मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं  
वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते ।  
मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे  
त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखे स्तम्भो भवेद्वादिनाम् ॥

॥ ५॥
- दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं  
भूभृत्सन्दमनं चलन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ।  
सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णेक्षणम्  
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥

॥ ६॥
- मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च सङ्कीलय  
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्यदेवधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ।  
शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराङ्गि पीताम्बरे  
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥

॥ ७॥



- मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये  
श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे ।  
मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं  
शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥ ८॥
- संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये  
विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।  
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा  
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ ९॥
- त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी  
योषित्कर्षणकारिणी जनमनःसम्मोहसन्दायिनी ।  
स्तम्भोत्सारणकारिणी पशुमनःसम्मोहसन्दायिनी  
जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥ १०॥
- विद्या लक्ष्मीर्नित्यसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः ।  
मानो भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नेरेण ॥ ११॥
- त्वत्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ।  
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तु ते ॥ १२॥
- पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोमलाम् ।  
शिलामुद्गरहस्तां च स्मरे तां बगलामुखीम् ॥ १३॥
- ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।  
गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ १४॥
- नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्धृत्वा  
यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।  
राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकास्ते वै  
यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सिद्धयः ॥ १५॥

॥ इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे श्री बगलामुखी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ श्री बगलामुखी हृदय स्तोत्रम् - १ ॥

- श्री देव्युवाच  
इदानीं खलु मे देव ! बगला-हृदयं प्रभो !  
कथयस्व महा-देव ! यद्यहं तव वल्लभा ॥ १ ॥
- श्रीईश्वरो वाच  
साधु साधु महा-प्राज्ञे ! सर्व-तन्त्रार्थ-साधिके !  
ब्रह्मास्त्र-देवतायाश्च, हृदयं वच्मि तत्त्वतः ॥ २ ॥
- हृदय-स्तोत्रम्  
गम्भीरां च मदोन्मत्तां, स्वर्ण-कान्ति-सम-प्रभाम् ।  
चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन-संस्थिताम् ॥ १ ॥
- ऊर्ध्व-केश-जटा-जूटां, कराल-वदनाम्बुजाम् ।  
मुद्गरं दक्षिणे हस्ते, पाशं वामेन धारिणीम् ॥ २ ॥
- रिपोर्जिह्वां त्रिशूलं च, पीत-गन्धानुलेपनाम् ।  
पीताम्बर-धरां सान्द्र-दृढ-पीन-पयोधराम् ॥ ३ ॥
- हेम-कुण्डल-भूषां च, पीत-चन्द्रार्ध-शेखराम् ।  
पीत-भूषण-भूषाढ्यां, स्वर्ण-सिंहासने स्थिताम् ॥ ४ ॥
- स्वानन्दानु-मयी देवी, रिपु-स्तम्भन-कारिणी ।  
मदनस्य रतेश्चापि, प्रीति-स्तम्भन-कारिणी ॥ ५ ॥
- महा-विद्या महा-माया, महा-मेधा महा-शिवा ।  
महा-मोहा महा-सूक्ष्मा, साधकस्य वर-प्रदा ॥ ६ ॥
- राजसी सात्त्विकी सत्या, तामसी तैजसी स्मृता ।  
तस्याः स्मरण-मात्रेण, त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात् ॥ ७ ॥
- गणेशो वटुकश्चैव, योगिन्यः क्षेत्र-पालकः ।  
गुरवश्च गुणास्तिस्त्रो, बगला स्तम्भिनी तथा ॥ ८ ॥
- जृम्भिणी मोदिनी चाम्बा, बालिका भूधरा तथा ।  
कलुषा करुणा धात्री, काल-कर्षिणिका परा ॥ ९ ॥
- भ्रामरी मन्द-गमना, भगस्था चैव भासिका ।  
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव, कौमारी वैष्णवी रमा ॥ १० ॥
- वाराही च तथेन्द्राणी, चामुण्डा भैरवाष्टकम् ।  
सुभगा प्रथमा प्रोक्ता, द्वितीया भग-मालिनी ॥ ११ ॥

- भग-वाहा तृतीया तु, भग-सिद्धाऽब्धि-मध्यगा ।  
भगस्य पातिनी पश्चात्, भग-मालिनी षष्ठिका ॥ ॥१२॥
- उड्डीयान-पीठ-निलया, जालन्धर-पीठ-संस्थिता ।  
काम-रुपं तथा संस्था, देवी-त्रितयमेव च ॥ ॥१३॥
- सिद्धौघा मानवौघाश्च, दिव्यौघा गुरवः क्रमात् ।  
क्रोधिनी जृम्भिणी चैव, देव्याश्चोभय पार्श्वयोः ॥ ॥१४॥
- पूज्यास्त्रिपुर-नाथश्च, योनि-मध्येऽम्बिका-युतः ।  
स्तम्भिनी या मह-विद्या, सत्यं सत्यं वरानने ॥ ॥१५॥
- फल-श्रुति एषा सा वैष्णवी माया, विद्यां यत्नेन गोपयेत् ।  
ब्रह्मास्त्र-देवतायाश्च, हृदयं परि-कीर्तितम् ॥ ॥ १ ॥  
ब्रह्मास्त्रं त्रिषु लोकेषु, दुष्प्राप्यं त्रिदशैरपि ।  
गोपनीयं प्रत्यनेन, न देयं यस्य कस्यचित् ॥ ॥ २ ॥  
गुरु-भक्ताय दातव्यं, वत्सरं दुःखिताय वै ।  
मातु-पितृ-रतो यस्तु, सर्व-ज्ञान-परायणः ॥ ॥ ३ ॥  
तस्मै देयमिदं देवि ! बगला-हृदयं परम् ।  
सर्वार्थ-साधकं दिव्यं, पठनाद् भोग-मोक्षदम् ॥ ॥ ४ ॥

॥ श्री रुद्रयामले उत्तरखण्डे श्री ब्रह्मास्त्र महाविद्या श्री बगलामुखी स्तोत्रम् ॥



## ॥ बगलामुखी हृदय स्तोत्रम् - २ ॥

- विनियोग : ॐ अस्य श्री बगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारदः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री बगलामुखी देवता ह्रीं बीजं क्लीं शक्तिः ऐं कीलकं श्रीबगलामुखी-वर-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
- ऋष्यादि-न्यास ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री बगलामुख्यै देवतायै नमः हृदये। ॐ ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- करांग-न्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
- हृदयादि न्यास : ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं कवचाय हुं। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्रीं क्लीं ऐं इति दिग्बन्धः।
  - वन्देऽहं देवीं पीतभूषणभूषिताम्।  
तेजोरुपमयीं देवीं पीततेजः स्वरूपिणीम् ॥ १ ॥
  - गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रुकुटीभीषणाननाम्।  
भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम् ॥ २ ॥
  - पूर्ण-चन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम्।  
पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम् ॥ ३ ॥
  - पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले।  
पीताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम् ॥ ४ ॥
  - पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्य रुपिणीम्।  
पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मजवन्दिताम् ॥ ५ ॥
  - लसज्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतं साञ्चितां स्याम्।  
वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीऽयसत्पादपद्माम् ॥ ६ ॥
  - सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते।  
रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैर्कृता-घातमातः ॥ ७ ॥
  - भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागज्जितामित्र गर्वा गरिष्ठाम्।  
गरीयो गुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम् ॥ ८ ॥

- जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम् ।  
भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम् ॥ १९ ॥
- तव ध्यान-निष्ठा-प्रतिष्ठात्म-प्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः ।  
प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिगा दासतुल्या भवन्ति ॥ १०॥
- नमामस्ते मातः कनक-कमनीयाङ्घ्रीजलजम् ।  
बलद्विद्युद्वर्णं घन-मितिर-विध्वंस-करणम् ॥  
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरण करणं सर्वशरणम् ।  
प्रपन्नानां मातर्जगति बगले दुःखदमनम् ॥ ११॥
- ज्वलज्ज्योत्स्ना रत्ना करमणिविभुषित्कां भवनम् ।  
स्मरामस्ते धाम स्मरहर हरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः ॥  
अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम् ।  
परं पीताकारं परिचित मणि द्वीपवसनम् ॥ १२॥
- वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितम् ।  
लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम् ।  
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने ।  
भजामो यच्छ्रेयो दिवि दूरवलभ्यं दिविषदाम् ॥ १३॥
- पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु ।  
यथा ते प्रासन्न्यं प्रतिपलमपरक्षयं प्रणमताम् ॥  
अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो ।  
दिशातः सद्-भक्तिं भुवि भगवतां भूरि भवदाम् ॥ १४॥
- मम सकलरिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु ।  
भगवति रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम् ॥  
व्यवसित खलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भाम् ।  
मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब प्रसीद ॥ १५॥
- ब्रजतु मम रिपूणां सद्गनि प्रेतसंस्था ।  
करधृतगदया तान् घातयित्वाऽशु रोषात् ॥  
सघनवसनधान्यं सद्ग तेषां प्रदह्य ।  
पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम् ॥ १६॥

- करधृतरिपुजिह्वा पीडनं व्यग्रहस्ताम् ।  
पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम् ॥  
प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां ।  
बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः ॥ ॥१७॥
- हृदयवचनकायैः कुर्वतां भक्तिपुञ्जं ।  
प्रकटति करुणार्द्रा प्रीणती जल्पतीति ॥  
धनमथ बहुधान्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिः ।  
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम् ॥ ॥१८॥
- तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं ।  
द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम् ॥  
मृदुलमपि शरं ते शर्मदं सूरिसेव्यं ।  
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम् ॥ ॥१९॥
- फल-श्रुति बगला हृदय स्तोत्रमिदं भक्ति-समन्वितः ।  
पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत् ॥ ॥२०॥
- पीता ध्यान परो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पत ।  
निष्कल्मषो भवेन् मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ॥२१॥
- आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम् ।  
यस्तिवदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः ॥ ॥२२॥
- देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम् ।  
पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥ ॥२३॥
- पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन् ।  
बगलां यः पठेन् नित्यं हृदय स्तोत्र मुत्तमम् ॥ ॥२४॥
- न किञ्चिद् दुर्लभं तस्यदृश्यते जगतीतले ।  
शत्रवो ग्लानिर्मायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः ॥ ॥२५॥

॥ श्री सिद्धेश्वर तंत्रे उत्तर-खण्डे बगला-पटले श्री बगला हृदय स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥



## ॥ माँ बगलामुखी स्तोत्रम् ॥

- **विनियोग :** अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य नारद ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः। श्री बगलामुखी देवता, बीजं स्वाहा शक्तिः कीलकं मम श्री बगलामुखी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।
- **ध्यानम्** सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीताम्बुकोल्लासिनीं,  
हेमाभांगरुचिं शषंकमुकुटां स्रक् चम्पकस्त्रग्युताम्,  
हस्तैमुद्गर, पाषबद्धरसनां संविभृतीं भूषणैव्यप्तिंगी  
बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ।
- ॐ मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदीं, सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।  
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगी देवीं भजामि धृतमुदग्रवैरिजिह्वाम् ॥ ॥ १ ॥
- जिह्वाग्रमादाय करेण देवी, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।  
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढयां द्विभुजां भजामि ॥ ॥ २ ॥
- चलत्कनककुण्डलोल्लसित चारु गण्डस्थलां,  
लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् ॥  
गदाहतविपक्षकांकलितलोलजिह्वाचंलाम् ।  
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवांगमनस्तंभिनीम् ॥ ॥ ३ ॥
- पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे, सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाद् यासिनीम् ।  
स्वर्णाभांकरपीडितारिरसनां भ्राम्यदां विभ्रमामित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥४॥
- देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पान्जलीन् ।  
भक्त्या वामकरे निधाय च मनुम्मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ।  
पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवषाद्वीजं स्मरेत् पार्थिवः ।  
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाडयं भवेत् तत्क्षणात् ॥ ॥ ५ ॥
- वादी मूकति रंकति क्षितिपतिवैष्णवरः शीतति ।  
क्रोधी शाम्यति दुःस्वप्नः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥  
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः ।  
श्रीनित्ये बगलामुखी प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ ॥ ६ ॥
- मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते,  
यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते ।  
मातः श्रीबगलेतिनामललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे,  
त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भे भवेद्वादिनाम् ॥ ॥ ७ ॥

- दष्टु स्तम्भनमगु विघ्नषमन दारिद्र्यविद्रावणम्,  
भूभषमनं चलन्मृगदृषान्चेतः समाकर्षणम्।  
सौभाग्यैकनिकेतनं समदृषां कारुण्यपूर्णाऽमृतम्,  
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥ ८ ॥
- मातर्भन्जय मे विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय,  
ब्राह्मीं मुद्रय नाषयाषुधिषणामुग्रांगतिं स्तम्भय।  
शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराणि पीताम्बरे,  
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥ ९ ॥
- मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विष्वाश्रये ।  
श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेषि रामे रमे ॥  
मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवगप्रदे ।  
दासोऽहं शरणागतः करुणया विष्वेष्ट्वरि त्राहिमाम् ॥ १० ॥
- सरम्भे चैरसंधे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध् ये,  
विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निषायाम् ।  
वष्ये वा स्तम्भने वा रिपुबधसमये निर्जने वा वने वा,  
गच्छस्तिष्ठस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाषुधीरः ॥ ११ ॥
- त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसिच्छेदिनी,  
योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्द सम्बन्धिनी ।  
दुष्टोच्चाटनकारिणीजनमनस्संमोहसंदायिनी,  
जिह्वाकीलनभैरवि! विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥ १२ ॥
- विद्याः लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्व साम्राज्यसिद्धिः।  
मानं भोगो वष्यमारोग्य सौख्यं, प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नेरेण ॥ १३ ॥
- यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि । दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तुते ॥ १४ ॥
- ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् । गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ १५ ॥
- पीतांबरा च द्वि-भुजां, त्रि-नेत्रां गात्र कोमलाम् । शिला-मुद्र हस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ॥ १६ ॥
- नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमहि यो देव्याः पठत्यादराद्- धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।  
राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पाः मृगेन्द्रादिका- स्तेवैयान्ति विमोहिता रिपुगणाः लक्ष्मीः  
स्थिरासिद्धयः ॥ १७ ॥

## ॥ मां बगलामुखी अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम् ॥

- ॐ ब्रह्मास्त्र-रूपिणी देवी, माता श्रीबगलामुखी ।  
चिच्छिक्तिर्ज्ञान-रूपा च, ब्रह्मानन्द-प्रदायिनी ॥ ॥ १ ॥
- महा-विद्या महा-लक्ष्मी श्रीमत् -त्रिपुर-सुन्दरी।  
भुवनेशी जगन्माता, पार्वती सर्व-मंगला ॥ ॥ २ ॥
- ललिता भैरवी शान्ता, अन्नपूर्णा कुलेश्वरी।  
वाराही छिन्नमस्ता च, तारा काली सरस्वती ॥ ॥ ३ ॥
- जगत् -पूज्या महा-माया, कामेशी भग-मालिनी।  
दक्ष-पुत्री शिवांकस्था, शिवरूपा शिवप्रिया ॥ ॥ ४ ॥
- सर्व-सम्पत्-करी देवी, सर्व-लोक वशंकरी।  
वेद-विद्या महा-पूज्या, भक्ताद्वेषी भयंकरी ॥ ॥ ५ ॥
- स्तम्भ-रूपा स्तम्भिनी च, दुष्ट-स्तम्भन-कारिणी।  
भक्त-प्रिया महा-भोगा, श्रीविद्या ललिताम्बिका ॥ ॥ ६ ॥
- मेना-पुत्री शिवानन्दा, मातंगी भुवनेश्वरी।  
नारसिंही नरेन्द्रा च, नृपाराध्या नरोत्तमा ॥ ॥ ७ ॥
- नागिनी नाग-पुत्री च, नगराज-सुता उमा।  
पीताम्बरा पीत-पुष्पा च, पीत-वस्त्र-प्रिया शुभा ॥ ॥ ८ ॥
- पीत-गन्ध-प्रिया रामा, पीत-रत्नार्चिता शिवा।  
अर्द्ध-चन्द्र-धरी देवी, गदा-मुद्-गर-धारिणी ॥ ॥ ९ ॥
- सावित्री त्रि-पदा शुद्धा, सद्यो राग-विवर्द्धिनी।  
विष्णु-रूपा जगन्मोहा, ब्रह्म-रूपा हरि-प्रिया ॥ ॥ १० ॥
- रुद्र-रूपा रुद्र-शक्तिदिन्मयी भक्त-वत्सला।  
लोक-माता शिवा सन्ध्या, शिव-पूजन-तत्परा ॥ ॥ ११ ॥
- धनाध्यक्षा धनेशी च, धर्मदा धनदा धना।  
चण्ड-दर्प-हरी देवी, शुम्भासुर-निवर्हिणी ॥ ॥ १२ ॥
- राज-राजेश्वरी देवी, महिषासुर-मर्दिनी।  
मधु-कैटभ-हन्त्री च, रक्त-बीज-विनाशिनी ॥ ॥ १३ ॥



- धूम्राक्ष-दैत्य-हन्त्री च, भण्डासुर-विनाशिनी।  
रेणु-पुत्री महा-माया, भ्रामरी भ्रमराम्बिका ॥ ॥१४॥
  - ज्वालामुखी भद्रकाली, बगला शत्रु-नाशिनी।  
इन्द्राणी इन्द्र-पूज्या च, गुह-माता गुणेश्वरी ॥ ॥१५॥
  - वज्र-पाश-धरा देवी, जिह्वा-मुद्-गर-धारिणी।  
भक्तानन्दकरी देवी, बगला परमेश्वरी ॥ ॥१६॥
  - फल-श्रुति अष्टोत्तरशतं नाम्नां, बगलायास्तु यः पठेत्।  
रिपु-बाधा-विनिर्मुक्तः, लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात् ॥ ॥ १ ॥
  - भूत-प्रेत-पिशाचाश्च, ग्रह-पीडा-निवारणम्।  
राजानो वशमायाति, सर्वैश्वर्यं च विन्दति ॥ ॥ २ ॥
  - नाना-विद्यां च लभते, राज्यं प्राप्नोति निश्चितम्।  
भुक्ति-मुक्तिमवाप्नोति, साक्षात् शिव-समो भवेत् ॥ ॥ ३ ॥
- ॥ श्रीरूद्रयामले सर्व-सिद्धि-प्रद श्री बगलाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

## ॥ माँ बगलामुखी पञ्जर स्तोत्रम् ॥

यह अति गोपनीय व रहस्यपूर्ण पञ्जर स्तोत्र अति दुर्लभ तथा परीक्षित है। इस पञ्जर का जप अथवा पाठ करने वाला साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाता है। घोर दारिद्र्य व विघ्नों के नाशक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक की माँ बगला स्वयं रक्षा करती हैं। शत्रु दल साधक को मूक होकर देखते रह जाते हैं।

- **विनियोगः**      ॐ अस्य श्रीमद् बगलामुखी पीताम्बरा पञ्जररूप स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान नारद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, जगद्वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवता, हत्त्री बीजं, स्वाहा शक्तिः, क्लीं कीलकं मम परसैन्य मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रादि कृत्य क्षयार्थं श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवता प्रीत्यर्थे च जपे विनियोगः।
- **ऋष्यादि-न्यास**      भगवान नारद ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे। जगद्वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमः हृदये। हत्त्री बीजाय नमः दक्षिणस्तने। स्वाहा शक्तिये नमः वामस्तने। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
- **करन्यास**      हत्त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। हत्त्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हत्त्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। हत्त्रैं अनामिकाभ्यां हुं। हत्त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। हत्त्रं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।
- **अंगन्यास**      हत्त्रां हृदयाय नमः। हत्त्रीं शिरसे स्वाहा। हत्त्रूं शिखायै वषट्। हत्त्रैं कवचाय हुं। हत्त्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। हत्त्रं अस्त्रय फट्।
- **व्यापक न्यास**      ॐ हत्त्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय हत्त्रीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।
- **अंगन्यास**      ॐ हत्त्रीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं। ॐ जिह्वां कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय हत्त्रीं ॐ स्वाहा, अस्त्रय फट्।
- **ध्यान**      मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां,  
सिंहासनों परिगतां परिपीतवर्णाम्।  
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषितांगी,  
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वां ॥
- **मानस पूजा**      श्री पीताम्बरायै नमः तं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।  
श्री पीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।  
श्री पीताम्बरायै नमः यं वायव्यात्मकं धूपं परिकल्पयामि।  
श्री पीताम्बरायै नमः रं अग्निआत्मकं दिपं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ।  
श्री पीताम्बरायै नमः सं सर्वात्मकं तम्बुलडि परिकल्पयामि ।

### ■ पञ्जर स्तोत्र

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम् ।

यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नराः क्वचित् ॥ १ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत् पीताम्बरा देवी, बगला बुद्धि-वर्द्धिनी ।

पातु मामनिशं साक्षात्, सहस्रार्क-समद्युति ॥ २ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिखादि-पाद-पर्यन्तं, वज्र-पञ्जर-धारिणी ।

ब्रह्मास्त्र-संज्ञा या देवी, पीताम्बरा-विभूषिता ॥ ३ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री बगला ह्यवत्वत्र, चोर्ध्व-भागं महेश्वरी ।

कामांकुशाकला पातु, बगला शास्त्र बोधिनी ॥ ४ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामितार्थदा ।

पातु मां बगला नित्यं, पीताम्बर सुधारिणी ॥ ५ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कर्णयोश्चैव युग-पदति-रत्न प्रपूजिता ।

पातु मां बगला देवी, नासिकां मे गुणाकर ॥ ६ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीत-पुष्पैः पीत-वस्त्रैः, पूजिता वेददायिनी ।

पातु मां बगला नित्यं, ब्रह्म-विष्णवादि-सेविता ॥ ७ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीताम्बरा प्रसन्नास्या, नेत्रयोर्युग-पद्-भ्रुवौ ।

पातु मां बगला नित्यं, बलदा पीत-वस्त्र-धृक् ॥ ८ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अधरोष्ठौ तथा दन्तान्, जिह्वां च मुखगां मम ।

पातु मां बगला देवी, पीताम्बर सुधारिणी ॥ ९ ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गले हस्ते तथा बाह्वोः, युग-पद्-बुद्धिदा-सताम् ।

पातु मां बगला देवी, दिव्य-स्नानुलेपना ॥ १० ॥

■ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृदये च स्तनौ नाभौ, करावपि कृशोदरी ।

पातु मां बगला नित्यं, पीत-वस्त्र घनावृता ॥ ११ ॥

■ जघ्वायां च तथा चोर्वोः गुल्फयोश्चाति-वेगिनी ।

अनुक्तमपि यत् स्थानं, त्वक्-केश-नख-लोमकम् ॥ १२ ॥

■ असृङ् मांसं तथाऽस्थिनी, सन्धयश्चापि मे परा ।

- श्री शिव उवाच ताः सर्वाः बगला देवी, रक्षन्मे च मनोहरा ॥ ॥१३॥
- इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः  
पञ्जरं बगला देव्याः घोर दारिद्र्य नाशनम् ।  
पञ्जरं यः पठेत् भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूतये ॥ ॥१४॥
- अव्याहत गतिश्चास्य ब्रह्मविष्णवादि सत्पुरे ।  
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तं कदाचन ॥ ॥१५॥
- न बाधन्ते नरव्याघ्र पञ्जरस्थं कदाचन ।  
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥ ॥१६॥
- पठनीयं प्रयत्नेन सर्वानर्थं विनाशनम् ।  
महा दारिद्र्य शमनं सर्वमांगल्यवर्धनम् ॥ ॥१७॥
- विद्या विनय सत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम् ।  
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम् ॥ ॥१८॥
- पठेत् स्मरेत् ध्यानसंस्थः स जयेन्मरणं नरः ।  
यः पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ॥ ॥१९॥
- कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद् विचरेद् भुवि ।  
चन्द्रसूर्य समोभूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥ ॥२०॥
- श्री सूत उवाच इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजम् ।  
भवशत दुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारकम् ।  
स्मरणमतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यः ।  
यदि विशति सदा वै पञ्जरं पण्डितः स्यात् ॥ ॥२१॥

॥ इति परम रहस्याति रहस्ये पीताम्बरा पञ्जर-स्तोत्रम् समाप्तम् ॥



## ॥ अथ पञ्जर न्यास स्तोत्रम् ॥

इस पञ्जर न्यास-स्तोत्र का पाठ जपादि से पूर्व करना चाहिए। इस स्तोत्र का पाठ करने पर साधक के चारों ओर साक्षात् माँ भगवती पीताम्बरा का अभेद्य कवच बन जाता है। उसके स्मरण मात्र से ही शत्रुओं की गति, मति, वाचा और बुद्धि) स्तम्भित हो जाते हैं।

- बगला पूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधरी ।  
पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते ॥ १ ॥
- जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा हि माम् ।  
वायव्ये च मदोन्मत्ता कौबेर्या च त्रिशूलिनी ॥ २ ॥
- ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्यां सततं मम ।  
संरक्षेन् मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका ॥ ३ ॥
- ऊर्ध्वं रक्षेन् महादेवी जिह्वा-स्तम्भन-कारिणी ।  
एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्व-सिद्धिदा ॥ ४ ॥
- एवं न्यासविधिं कृत्वा यत् किञ्चिज् जपमाचरेत् ।  
तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥ ५ ॥

॥ इति पञ्जर न्यास स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

## ॥ माँ बगलामुखी कवचम् - १ ॥

- ॐ ह्रीं मे हृदयं पातु पादौ श्रीबगलामुखी ।  
ललाटे सततं पातु दुष्टनिग्रहकारिणी ॥ १ ॥
- रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुषोर्मम ।  
कटौ पृष्ठे महेशानि कर्णौ शंकरभामिनी ॥ २ ॥
- वर्जितानि तु स्थानानि यानि च कवचेन हि ।  
तानि सर्वाणि मे देवि सततं पातु स्तम्भिनी ॥ ३ ॥
- अज्ञात्वा कवचं देवि यो भजेद् बगलामुखीम् ।  
शस्त्राघातमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ४ ॥

## ॥ माँ बगला मुखी कवचम् - २ ॥

यह कवच विश्वसारोद्धार तन्त्र से लिया गया है। पार्वती जी के द्वारा भगवान शिव से पूछे जाने पर भगवती बगला के कवच के विषय में प्रभु वर्णन करते हैं कि देवी बगला शत्रुओं के कुल के लिये जंगल में लगी अग्नि के समान हैं। वे साम्राज्य देने वाली और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं। इस कवच के पाठ से अपुत्र को धीर, वीर और शतायुष पुत्र की प्राप्ति होती है और निर्धन को धन प्राप्त होता है। महानिशा में इस कवच का पाठ करने से सात दिन में ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। तीन रातों को पाठ करने से ही वशीकरण सिद्ध हो जाता है। मक्खन को इस कवच से अभिमन्त्रित करके यदि बन्धया स्त्री को खिलाया जाये, तो वह पुत्रवती हो जाती है। इसके पाठ व नित्य पूजन से मनुष्य बृहस्पति के समान हो जाता है, नारी समूह में साधक कामदेव के समान व शत्रुओं के लिये यम के समान हो जाता है। मां बगला के प्रसाद से उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है। उसके गले से कविता लहरी का प्रवाह होने लगता है।

इस कवच का पुरश्चरण एक सौ ग्यारह पाठ करने से होता है, बिना पुरश्चरण के इसका उतना फल प्राप्त नहीं होता। इस कवच को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पुरुष को दाहिने हाथ में व स्त्री को बायें हाथ में धारण करना चाहिये

- शिरो में पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातुललाटकम् ।  
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ॥ ॥ १ ॥
- श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।  
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ॥ ॥ २ ॥
- देहिद्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम ।  
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ॥ ॥ ३ ॥
- कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।  
मायायुक्ता तथा स्वाहा, हृदयं पातु सर्वदा ॥ ॥ ४ ॥
- अष्टाधिक चत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी ।  
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेरण्ये सदा मम ॥ ॥ ५ ॥
- ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्वसन्धिषु ।  
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥ ॥ ६ ॥
- ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलावतु ।  
मुखिवर्णद्वयं पातु लिंग मे मुष्क-युग्मकम् ॥ ॥ ७ ॥
- जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।  
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी ॥ ॥ ८ ॥

- जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी ।  
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥ १ ॥
- जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।  
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ॥ १० ॥
- विनाशयपदं पातु पादांगुल्योर्नखानि मे ।  
हीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रियवचांसि मे ॥ ११ ॥
- सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेवतु ।  
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ॥ १२ ॥
- माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेवतु ।  
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥ १३ ॥
- वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेवतु ।  
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदावतु ॥ १४ ॥
- इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।  
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥ १५ ॥
- श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।  
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ॥ १६ ॥
- योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।  
इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥ १७ ॥

## ॥ माँ बगलामुखी कवचम् - ३ ॥

- श्री भैरवी उवाच श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर ।  
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥ १ ॥
  - वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम् ।  
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशनम् ॥ २ ॥
  - श्रीभैरव उवाच कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवी-प्राण-वल्लभम् ।  
पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥ ३ ॥
  - विनियोग ॐ अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारद ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । बगलामुखी देवता ।  
लं बीजम् । ईं शक्तिं । ऐं कीलकम् पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः ।
  - ॐ शिरो मे बगला पातु हृदयैकाक्षरी परा ।  
ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी ॥ ४ ॥
  - गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी ।  
वैरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥ ५ ॥
  - उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा ।  
परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥ ६ ॥
  - हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिपातु मे ।  
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसङ्कटे ॥ ७ ॥
  - पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गी शिवनर्तकी ।  
श्रीविद्या समय पातु मातङ्गी पूरिता शिवा ॥ ८ ॥
  - पातु पुत्रं सुतांश्चैव कलत्रं कालिका मम ।  
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥ ९ ॥
  - रंध्य हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम् ।  
न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १० ॥
  - पाठनाद्भारणादस्य पूजनाद्वाञ्छितं लभेत् ।  
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥ ११ ॥
  - पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः ।  
वश्ये चाकर्षणो चैव मारणे मोहने तथा ॥ १२ ॥
  - महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः ।  
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति ॥ १३ ॥
- ॥ इति श्री रुद्रयामले बगलामुखी कवचम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ श्री बगलामुखी शत्रु विनाशक कवचम् - ४ ॥

- श्री देव्युवाच नमस्ते शम्भवे तुभ्यं नमस्ते शशिशेखर ।  
त्वत्प्रसात्युतं सर्वमधुना कवचं वद ॥ ॥ १ ॥
- श्री शिव उवाच शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ।  
यस्य स्मरणमात्रेण रिपोः स्तम्भो भवेत् क्षणात् ॥ ॥ २ ॥
- कवचस्य च देवेशि महामाया प्रभावतः ।  
पङ्क्तिः छन्दः समुद्दिष्टं देवता बगलामुखी ॥ ॥ ३ ॥
- धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।  
ॐकारो मे शिरः पातु ह्रींकारो वदनेऽवतु ॥ ॥ ४ ॥
- बगलामुखि दोर्युग्मं कण्ठे सर्व-सदाऽवतु ।  
दुष्टानां पातु हृदयं वाचं मुखं ततः पदम् ॥ ॥ ५ ॥
- उदरे सर्वदा पातु स्तम्भयेति सदा मम ।  
जिह्वां कीलय मे मातर्बगला सर्वदाऽवतु ॥ ॥ ६ ॥
- बुद्धि विनाशय पादौ तु ह्रीं ॐ मे दिग्विदिक्षु च ।  
स्वाहा मे सर्वदा पातु सर्वत्र सर्वसन्धिषु ॥ ॥ ७ ॥
- इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ।  
यस्य स्मरण मात्रेण सर्वस्तम्भो भवेद् क्षणात् ॥ ॥ ८ ॥
- यद् धृत्वा विविधा दैत्या वासवेन हताः पुरा ।  
यस्य प्रसादात् सिद्धोऽहं हरिः सत्त्वगुणान्वितः ॥ ॥ ९ ॥
- वेधा सृष्टिं वितनुते कामः सर्वजगज्जयी ।  
लिखित्वा धारयेद् यस्तु कण्ठे वा दक्षिणे भुजे ॥ ॥ १० ॥
- षट्कर्मसिद्धिस्तस्याशु मम तुल्यो भवेद् ध्रुवम् ।  
अज्ञात्वा कवचं देवि तस्य मन्त्रो न सिध्यति ॥ ॥ ११ ॥

॥ इति श्री बगलामुखी शत्रु विनाशक कवचम् समाप्तम् ॥



## ॥ माँ बगलामुखी सूक्तम् ॥

- दुष्ट तांत्रिक विधान को नष्ट करने हेतु। शत्रु द्वारा अभिचार करके कहीं गाड़ा हो, दुकान, व्यापार, अग्निशाला, पाक-शाला, वाहन, मशीनरी, सेना, समूह, मित्र मंडली, ग्राहकों का, गायन विद्या का, भूमि व शरीर का स्तंभन, बंधन किया हो, कोई रोग हो, मुकद्दमा हो, वशीकरण करना हो या तोड़ना हो, परिस्थितियाँ विपरीत हों तो इस स्तोत्र के पाठ से दूर होते हैं।
- पशु व मनुष्य की अस्थि, चर्म, नख, केश, सप्त धान्य, अनुष्ठान यज्ञ द्वारा तैयार की हुई कृत्या अथवा कुछ तांत्रिक अभिचार द्वारा खिलाई गई कृत्या का शमन होता है।
- दुर्गा शप्तशति के हर अध्याय के बाद पाठ करना भी अति शुभ माना जाता है।
- उत्तर की ओर मुख करके माँ बगलामुखी का ध्यान करके अपनी कामना मन में बोलते हुए इस स्तोत्र का पाठ करें। उत्तम परिणाम के लिये ११ पाठ एक बार में अवश्य करें।
- उत्तम होगा कि आप पंचोपचार करें। जिन भक्तों को विधि न पता हो वह माँ का भोग लगाकर कामना करते हुए भी शुरू कर सकते हैं।
- यदि गुरु धारण किया हो तो अति उत्तम अन्यथा गुरु धारण करके उनके मार्गदर्शन में जप करें।
- इसका गलत प्रयोग कदापि न करें अन्यथा आपके जीवन में बहुत कुछ अनर्थ हो सकता है। जप काल में मांस, किसी भी प्रकार का नशा, संभोग वर्जित है।

- **संकल्प** ॐ तत्सद्य ..... प्रसाद सिद्धी द्वारा मम यजमानस्य (नाम दें) सर्वाभीष्ट सिद्धिर्धे पर प्रयोग, पर मंत्र-तंत्र-यंत्र विनाशार्थे, सर्व दुष्ट ग्रहे बाधा निवाणार्थे, सर्व उपद्रव शमनार्थे श्री भगवती पीताम्बरायाः बगला सूक्तस्ये ग्यारह सहस्र पाठे अहम् कुर्वे। (जल पृथ्वी पर डाले दें)

- **विनियोगः** ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारद रिषिः, तरिष्टुप छंद, बगलामुखी देवता, ह्रीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ममाभिष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

- **ध्यानम्** मध्ये सुधाब्धि मणि मंडप रत्न वेद्यां,  
सिंघासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्,  
पीताम्बरा भरण माल्य विभुषिताङ्गी,  
देवीं भजामि धृत मुग्दर वैरिजिव्याम्  
जिव्याग्र मादाय करेण देवीं,  
वामेन शत्रून परिपीडयंतीम्,  
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,  
पीताम्बराद्यां धिभुजां नमामि ॥

## ■ स्तोत्रम्

- यां ते चक्रुः रामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्र धान्ये ।  
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ १ ॥
- यां ते चक्रुः वृक वाका वजे वा यां कुरीरिणी ।  
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ २ ॥
- यां ते चक्रुः एक शफे पशुनामुभ्यदति ।  
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ३ ॥
- यां ते चक्रुरमूलायां वलग्म वा नराच्याम ।  
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ४ ॥
- यां ते चक्रुः गाहपत्ये पूर्वाग्नावतु दुश्चितः ।  
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ५ ॥
- यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधि देवते ।  
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ६ ॥
- यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिषवायुधे ।  
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ७ ॥
- यां ते कृत्यां कूपे वदधुः शमशाने वा निचखनुः ।  
सद्ग्न्यि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ८ ॥
- यां ते चक्रुः पुरुषस्यास्थे सदभगि अग्नौसंकसुके च यां ।  
मोकं निदहिं क्रव्यादम पुनः प्रतिहरमि तां ॥ ९ ॥
- अपथैनाज भारैणाम तां पथेतः प्रहिण्मासी ।  
अधीरो मर्या धीरेभ्यः संजभाराचित्या ॥ १० ॥
- यश्चकार न शशाक कतुम शश्रे पादमन्गुरिम ।  
चकार भद्रमस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः ॥ ११ ॥
- कृत्याकृतम वलगिनं मूलिनं शपथेऽप्ययम ।  
इन्द्रस्तम हन्तुमहता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्त्या ॥ १२ ॥

## ॥ विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् - १ ॥

विपरीत प्रत्यंगिरा मंत्र व स्तोत्र शत्रु की प्रबलतम क्रियाओं को निष्फल करने के साथ ही ग्रह, नक्षत्र, देवता, यक्ष, गंधर्व एवं राक्षसी वृत्ति से भी मुकाबले के लिए विपरीत प्रत्यंगिरा और महाविपरीत प्रत्यंगिरा अत्यंत सफल और कारगर होता है। इसका प्रयोग निष्फल नहीं जाता। इसकी साधना करने वालों को दुनिया में किसी का डर नहीं रह जाता है। बेहतर होगा कि योग्य गुरु की देखरेख में ही इस साधना को पूरा किया जाए।

- **विनियोग**      ॐ अस्य श्री विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र मंत्रस्य । भैरव ऋषिः । अनुष्टुप-छंदः ।  
श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता । हं बीजं । ह्रीं शक्तिः । क्लीं क्लीकं ।  
ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः ।
- **करंगन्यास**      ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ।  
ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः । ॐ मां रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।  
ॐ मम शत्रून् भंजय भंजय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।
- **हृदयादिन्यासः**      ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रीं शिखायै वषट् ।  
ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुम् । ॐ मां रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट् ।  
ॐ मम शत्रून् भंजय भंजय अस्त्राय फट् ।
- **दिग्बन्धः**      ॐ भूर्भुवः स्वः । इति दिग्बन्धः । (सभी दिशाओं में चुटकी बजाएं)
- **लघु मंत्र**      ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भंजय भंजय फे हूं फट स्वाहा ।  
108 बार प्रतिदिन जप करें । यदि शत्रु प्रबल हो तो एक बार में 16 हजार मंत्र के जप का संकल्प लेकर दसवें हिस्से का हवन करें । हवन में कालीमिर्च, लावा, सरसो, नमक और घी की समान मात्रा हो ।
- **अष्टोत्तरशतं चास्य जपं चैव प्रकीर्तितम् ।**  
**ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोह्यनुष्टुप प्रकीर्तितम् ॥      ॥ १ ॥**
- **देवता दैशिका रक्ता नाम प्रत्यंगिरेति च ।**  
**पूर्वबीजैः षडंगानि कल्पयेत् साधकोत्तमः ।**  
**सर्वदृष्टोपचारैश्च ध्यायेत् प्रत्यंगिरां शुभाम् ॥      ॥ २ ॥**
- **ध्यानम्**      टंकं कपालं डमरुं त्रिशूलं संबिभ्रती चन्द्रकलावतंसा ।  
पिंगोर्ध्वकेशाऽसित भीमदंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली ॥      ॥ ३ ॥
- **एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमेकविंशतिवासरान् ।**  
**शत्रूणां नाशने ह्येतत् प्रकाशोऽयं सुनिश्चयः ॥      ॥ ४ ॥**
- **अष्टम्यामर्धरात्रे तु शरदकाले महानिशि ।**  
**आधारिता चेच्छ्रीकाली तत्क्षणात् सिद्धिदा नृणाम् ॥ ५ ॥**

- सर्वोपचारसम्पन्न वस्त्र-रत्न-कलादिभिः ।  
पुष्पैश्च कृष्णवर्णैश्च साधयेत् कालिकां वराम् ॥ ॥ ६ ॥
- वर्षादूर्ध्वमजम् मेषं मृदं वाऽथ यथाविधि ।  
दद्यात् पूर्वं महेशानि ततश्च जपमाचरेत् ॥ ॥ ७ ॥
- एकाहात् सिद्धिदा काली सत्यं सत्यं न संशयः ।  
मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्यात् समाहितः ॥ ॥ ८ ॥
- मरीच-लाजा-लवणैः सार्षपैर्मारणं भवेत् ।  
महाजनपदे चैव न भयं विद्यते क्वचित् ॥ ॥ ९ ॥
- प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत् ततः ।  
मध्ये नामांकितं कृत्वा शत्रुरूपांश्च पुत्तलीम् ॥ ॥ १० ॥
- जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ जुहुयात्ततः ।  
तत्रायुत जपं कुर्यात् त्रिरात्रं मारणं रिपोः ॥ ॥ ११ ॥
- महाज्वाला भवेत्तस्य तप्तताम्रशलाकया ।  
गुदद्वारे प्रदद्याच्च सप्ताहान् मारणं रिपोः ॥ ॥ १२ ॥
- प्रत्यंगिरा मया प्रोक्ता पठिता पाठिता नरैः ।  
लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत् ।  
मुच्यते सर्वपापेभ्यो नाल्पमृत्युः कथंचन ॥ ॥ १३ ॥
- ग्रहाः ऋक्षास्तथा सिंहा भूता यक्षाश्च राक्षसाः ।  
तस्या पीडां न कुर्वन्ति दिवि भुव्यन्तरिक्षगाः ॥ ॥ १४ ॥
- चतुष्पदेषु दुर्गेषु वनेषु पवनेषु च ।  
श्मशाने दुर्गमे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ ॥ १५ ॥
- ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां चां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं वां धां मां सां रक्षां कुरु ।  
ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुं ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरु । ॐ ॐ हुं प्लुं रक्षां कुरु ।
- ॐ नमो विपरीतप्रत्यंगिरायै विद्याराज्ञि त्रैलोक्यवशंकरि तुष्टि-पुष्टि-करि सर्व-पीडा-पहारिणि  
सर्वापन्नाशिनि सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिनि मोदिनि सर्वाशास्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि  
तथा परमंत्र-तंत्र-यंत्र विषचूर्णं सर्व प्रयोगादीनन्येषां निर्वर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कलिपातिनि  
सर्वहिंसा मा कारयति अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवासुर  
राक्षसास्तिर्यग्योनिःसर्वहिंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मंत्र-तंत्र-यंत्र-विष-चूर्ण-सर्व  
प्रयोगादीनात्महस्तेन यः करोति करिष्यति कारिष्यति तान् सर्वानन्येषां निर्वर्तयित्वा पातय  
कारय मस्तके स्वाहा ।

॥ इति भैरवी तन्त्रे भैरवी संवादे विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

## ॥ महा विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्रम् - २ ॥

### ■ महेश्वर उवाच

- शृणु देवि, महा-विद्यां, सर्व-सिद्धि-प्रदायिकां ।  
यस्याः विज्ञान-मात्रेण, शत्रु-वर्गाः लयं गताः ॥ १ ॥
- विपरीता महा-काली, सर्व-भूत-भयंकरी ।  
यस्याः प्रसंग-मात्रेण, कम्पते च जगत्-त्रयम् ॥ २ ॥
- न च शान्ति-प्रदः कोऽपि, परमेशो न चैव हि ।  
देवताः प्रलयं यान्ति, किं पुनर्मानवादयः ॥ ३ ॥
- पठनाद् धारणाद् देवि, सृष्टि-संहारको भवेत् ।  
अभिचारादिकाः सर्वा या या साध्य-तमाः क्रियाः ।  
स्मरेणन महा-काल्याः, नाशं जग्मुः सुरेश्वरि ॥ ४ ॥
- सिद्धि-विद्या महा काली, यत्रेवेह च मोदते ।  
सप्त-लक्ष-महा-विद्याः, गोपिताः परमेश्वरि ॥ ५ ॥
- महा-काली महा-देवी, शंकरश्रेष्ठ-देवता ।  
यस्याः प्रसाद-मात्रेण, पर-ब्रह्म महेश्वरः ॥ ६ ॥
- कृत्रिमादि-विषघ्नी सा, प्रलयाग्नि-निवर्तिका ॥ ७ ॥
- त्वदं-घ्निदर्शनादेव, कम्पमानो महेश्वरः ।  
यस्य निग्रह-मात्रेण, पृथिवी प्रलयं गता ॥ ८ ॥
- दश-विद्याः यदा ज्ञाता, दश-द्वार-समाश्रिताः ।  
प्राची-द्वारे भुवनेशी, दक्षिणे कालिका तथा ॥ ९ ॥
- नाक्षत्री पश्चिमे द्वारे, उत्तरे भैरवी तथा ।  
ऐशान्यां सततं देवि, प्रचण्ड-चण्डिका तथा ॥ १० ॥
- आग्नेय्यां बगला-देवी, रक्षः-कोणे मतंगिनी ।  
धूमावती च वायव्ये, अध-ऊर्ध्वे च सुन्दरी ॥ ११ ॥
- सम्मुखे षोडशी देवी, जाग्रत्-स्वप्न-स्वरूपिणी ।  
वाम-भागे च देवेशि, महा-त्रिपुर-सुन्दरी ॥ १२ ॥
- अंश-रूपेण देवेशि, सर्वाः देव्यः प्रतिष्ठिताः ।  
महा-प्रत्यंगिरा चैव, प्रत्यंगिरा तथोदिता ॥ १३ ॥



- महा-विष्णुर्यदा ज्ञाता, भुवनानां महेश्वरि ।  
कर्ता पाता च संहर्ता, सत्यं सत्यं वदामि ते ॥ ॥१४॥
- भुक्ति-मुक्ति-प्रदा देवी, महा-काली सुनिश्चितम् ।  
वेद-शास्त्र-प्रगुप्ता सा, नन्दस्या देवतैरपि ॥ ॥१५॥
- अनन्त-कोटि-सूर्याभा, सर्व-जन्तु-भयंकरी ।  
ध्यान-ज्ञान-विहीना सा, वेदान्तामृत-वर्षिणी ॥ ॥१६॥
- सर्व-मन्त्र-मयी काली, निगमागम-कारिणी ।  
निगमागम-कारी सा, महा-प्रलय-कारिणी ॥ ॥१७॥
- यस्या अंग-धर्म-लवा च, सा गंगा परमोदिता ।  
महा-काली नगेऽनुस्था, विपरीता महोदयाः ॥ ॥१८॥
- विपरीता प्रत्यंगिरा, तत्र काली प्रतिष्ठिता ।  
साधक स्मरण-मात्रेण, शत्रूणां निगमागमाः ॥ ॥१९॥
- नाशं जग्मुः नाशीं जग्मुः सत्यं सत्यं वदामि ते ।  
पर-ब्रह्म महा-देवि, पूजनैरीश्वरो भवेत् ॥ ॥२०॥
- शिव-कोटि-समो योगी, विष्णु-कोटि-समः स्थिरः ।  
सर्वैराराधिता सा वै, भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी ॥ ॥२१॥
- गुरु-मन्त्र-शतं जप्त्वा, श्वेत-सर्षप मानयेत् ॥ ॥२२॥
- आत्मरक्षां शत्रुनाशं सा करोति च तत्क्षणात् ।  
ऋषिन्यासादिकं कृत्वा सर्षपैर्मारणं चरेत् ॥ ॥२३॥
- गुरु मंत्र ॐ हुं स्फारय स्फारय मारय मारय शत्रुवर्गान् नाशय नाशय स्वाहा ।  
सौ बार जप करें । मारण के लिए सफेद सरसों का प्रयोग करें ।
- विनियोग ॐ अस्य श्री महाविपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र मंत्रस्य महाकाल भैरव ऋषिः ।  
स्त्रिष्टुप् छन्दः । श्री महाविपरीत प्रत्यंगिरा देवता । हं बीजं । ह्रीं शक्तिः ।  
क्लीं कीलकं । मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।
- ऋष्यादि-न्यासः शिरसि श्रीमहा-काल-भैरव ऋषये नमः । मुखे त्रिष्टुप् छन्दसे नमः । हृदि श्रीमहा-  
विपरीत-प्रत्यंगिरा देवतायै नमः । गुह्ये हूं बीजाय नमः । पादयोः ह्रीं शक्तये नमः ।  
नाभौ क्लीं कीलकाय नमः । सर्वांगे मम श्रीमहा-विपरीत-प्रत्यंगिरा-प्रसादात् सर्वत्र

सर्वदा सर्व-विध-रक्षा-पूर्वक सर्व-शत्रूणां नाशार्थं यथोक्त-फल-प्राप्त्यर्थं वा पाठे विनियोगाय नमः।

■ कर-न्यासः

हूं ह्रीं क्लीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । हूं ह्रीं क्लीं ॐ तर्जनीभ्यां नमः।  
हूं ह्रीं क्लीं ॐ मध्यमाभ्यां नमः । हूं ह्रीं क्लीं ॐ अनामिकाभ्यां नमः।  
हूं ह्रीं क्लीं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हूं ह्रीं क्लीं ॐ कर-तल-द्वयोर्ममः।

■ हृदयादि-न्यासः

हूं ह्रीं क्लीं ॐ हृदयाय नमः । हूं ह्रीं क्लीं ॐ शिरसे स्वाहा ।  
हूं ह्रीं क्लीं ॐ शिखायै वषट् । हूं ह्रीं क्लीं ॐ कवचाय हुम् ।  
हूं ह्रीं क्लीं ॐ नेत्र-त्रयाय वौषट् । हूं ह्रीं क्लीं ॐ अस्त्राय फट् ।

■ माला मंत्र

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमो विपरीतप्रत्यंगिरायै सहस्रानेक कार्य लोचनायै कोटि विद्युज्-जिह्वायै महाव्यापिन्यै संहाररूपायै जन्मशांति कारिण्यै मम सपरिवारकस्य भावि भूत भवच्छत्रु दाराप्रत्यान् संहारय-संहारय महाप्रभावं दर्शय-दर्शय हिलि-हिलि किलि-किलि मिलि-मिलि चिलि-चिलि भूरि-भूरि विद्युज्-जिह्वे ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल ध्वंसय-ध्वंसय प्रध्वंसय-प्रध्वंसय ग्रासय-ग्रासय पिब-पिब नाशय-नाशय त्रासय-त्रासय वित्रासय-वित्रासय मारय-मारय विमारय-विमारय भ्रामय-भ्रामय विभ्रामय-विभ्रामय द्रावय-द्रावय विद्रावय-विद्रावय हूं हूं फट् स्वाहा ।

हूं हूं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत प्रत्यंगिरे हूं लं ह्रीं लं क्लीं लं ॐ लं फट् फट् स्वाहा ।

हूं लं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीत प्रत्यंगिरे मम सपरिवारकस्य यावच्छत्रून् देवता-पितृ-पिशाच-नाग-गरुड-किन्नर-विद्याधर-गंधर्व-यक्ष-राक्षस-लोकपालान् ग्रह-भूत-नर-लोकान् समन्त्रान् सौषधान् सायुधान् स-सहायान् पाणौ छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि निकृन्तय-निकृन्तय छेदय-छेदय उच्चाटय-उच्चाटय मारय-मारय तेषां साहंकारादि धर्मान् कीलय-कीलय घातय-घातय नाशय-नाशय विपरीत प्रत्यंगिरे स्फ्रेन् स्फ्रेत् कारिणी ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ॐ जँ ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः ॐ ठः मम सपरिवारकस्य शत्रूणां सर्वाः विद्याः स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय हस्तौ, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय मुखं, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय नेत्राणि, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय दन्तान्, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय जिह्वां, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय पादौ, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय गुह्यं, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय सकुटुम्बानां, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय स्थानं, स्तंभय-स्तंभय नाशय-नाशय सं प्राणान् कीलय-कीलय नाशय-नाशय हूं हूं हूं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा ।

मम सपरिवारकस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा । ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं हूं ह्रीं क्लीं  
हूं सों विपरीत प्रत्यंगिरे! मम सपरिवारकस्य भूत-भविष्य-च्छत्रूणामुच्चाटनं कुरु कुरु हूं हूं फट्  
स्वाहा ।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं वं वं वं वं वं लं लं लं लं लं रं रं रं रं रं यं यं यं यं यं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ  
नमो भगवति विपरीत प्रत्यंगिरे दुष्ट-चांडालिनी-त्रिशूल-वज्रांकुश-शक्ति-शूल-धनुः-शर-  
पाशधारिणी शत्रुरुधिर चर्म मेदो मांसास्थि मज्जा-शुक्र-मेहन-वसा-वाक् प्राण मस्तक  
हेत्वादिभक्षिणी परब्रह्मशिवे ज्वालादायिनी मालिनी शत्रूच्चाटन-मारण-क्षोभन-स्तंभन-मोहन-  
द्रावण-जृम्भण-भ्रामण-रौद्रण-सन्तापन-यंत्र-मंत्र-तंत्रान्तर्याग पुरश्चरण भूतशुद्धि पूजाफल  
परमनिर्वाण हारण कारिणि कपालखट्वांग परशुधारिणि मम सपरिवारकस्य भूतभविष्यच्छत्रून्  
स-सहायान् सवाहनान् हन-हन रण-रण दह-दह दम-दम धम-धम पच-पच मथ-मथ लंघय-लंघय  
खादय-खादय चर्वय-चर्वय व्यथय-व्यथय ज्वरय-ज्वरय मूकान् कुरु-कुरु ज्ञानं हर-हर हूं हूं फट् फट्  
स्वाहा ।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं हूं हूं हूं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ  
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत प्रत्यंगिरे ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं हूं हूं हूं क्लीं क्लीं क्लीं  
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् स्वाहा ।

मम सपरिवारकस्य कृत मंत्र-यंत्र-तंत्र हवन कृतौषध विषचूर्ण शस्त्राद्यभिचार  
सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति वा तान् सर्वान् हन-हन स्फारय-स्फारय सर्वतो  
रक्षां कुरु-कुरु हूं हूं फट् फट् स्वाहा ।

हूं हूं हूं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ओं ओं  
ओं ओं ओं ओं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा ।

ॐ हूं ह्रीं क्लीं ॐ अं विपरीत प्रत्यंगिरे मम सपरिवारकस्य शत्रवः कुर्वन्ति करिष्यन्ति  
शत्रुश्च कारयामास कारयन्ति कारयिष्यन्ति याऽन्यायं कृत्यान्तैः सार्धं तांस्तां विपरीतां कुरु-कुरु  
नाशय-नाशय मारय-मारय श्मशानस्थानं कुरु-कुरु कृत्यादिकां क्रियां भावि भूत भवच्छत्रूणां  
यावत्-कृत्यादिकां क्रियां विपरीतां कुरु-कुरु तान् डाकिनीमुखे हारय-हारय भीषय-भीषय त्रासय-  
त्रासय परम शमन रूपेण हन-हन धर्मावच्छिन्न निर्वाणं हर-हर तेषाम् इष्टदेवानां शासय-शासय  
क्षोभय-क्षोभय प्राणादि मनोबुद्ध्य हंकार क्षुत्तृष्णा कर्षण लयन आवागमन मरणादिकं नाशय-  
नाशय हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा ।

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं  
जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं हूं हूं हूं हूं हूं  
हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विपरीत प्रत्यंगिरे हूं हूं हूं हूं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं  
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ फट् स्वाहा ।

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं  
जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं हूं हूं हूं हूं  
हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ  
ॐ फट् स्वाहा ।

अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ङं घं गं खं कं जं झं जं  
छं चं णं ढं डं ठं टं नं धं दं थं तं मं भं बं फं पं क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं ॐ ॐ  
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम सपरिवारकस्य स्थाने शत्रूणां कृत्यान् सर्वान् विपरीतान् कुरु-कुरु तेषां  
तंत्र-मंत्र तंत्रार्चन श्मशानरोहण भूमिस्थापन भस्म प्रक्षेपण पुरश्चरण होमाभिषेकादिकान् कृत्यान्  
दूरी कुरु-कुरु हूं विपरीत प्रत्यंगिरे मां सपरिवारकं सर्वतः सर्वेभ्यो रक्ष-रक्ष हूं ह्रीं फट् स्वाहा ।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं जं  
झं जं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ क्लीं  
ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ हूं ह्रीं क्लीं ॐ  
विपरीत प्रत्यंगिरे हूं ह्रीं क्लीं ॐ फट् स्वाहा ।

ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं अं  
आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं जं टं ठं  
डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं विपरीत प्रत्यंगिरे मम  
सपरिवारकस्य शत्रूणां विपरीत क्रियां नाशय-नाशय त्रुटिं कुरु-कुरु तेषामिष्ट देवतादि विनाशं कुरु-  
कुरु सिद्धम् अपनय-अपनय विपरीत प्रत्यंगिरे शत्रुमर्दिनि भयंकरि नाना कृत्यामर्दिनि ज्वालिनि  
महाघोरतरे त्रिभुवन भयंकरि शत्रुभ्यः मम सपरिवारकस्य चक्षुः श्रोत्राणि पादौ सर्वतः सर्वेभ्यः  
सर्वदा रक्षां कुरु-कुरु स्वाहा ।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वसुंधरे मम सपरिवार-कस्य स्थानं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ महालक्ष्मि मम सपरिवार-कस्य पादौ रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चंडिके मम सपरिवार-कस्य जंघे रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ चामुंडे मम सपरिवार-कस्य गुह्यं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इंद्राणी मम सपरिवार-कस्य नाभिं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नारसिंहि मम सपरिवार-कस्य बाहू रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वाराहि मम सपरिवारकस्य हृद्यं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ वैष्णवि मम सपरिवार-कस्य कंठं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
श्रीं ह्रीं ऐं ॐ कौमारि मम सपरिवार-कस्य वक्त्रं रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ माहेश्वरि मम सपरिवार-कस्य नेत्रे रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
 श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ब्रह्माणि मम सपरिवार-कस्य शिरो रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।  
 हूं ह्रीं क्लीं ॐ विपरीतप्रत्यंगिरे मम सपरिवार-कस्य छिद्रं सर्वगात्राणि रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

- सन्तापिनी संहारिणी, रौद्री च भ्रामिणी तथा ।  
 जृम्भिणी द्राविणी चैव, क्षोभिणि मोहिनी ततः ॥ ॥२४॥
- स्तम्भिनी चांऽशरूपास्ताः, शत्रु-पक्षे नियोजिताः ।  
 प्रेरिता साधकेन्द्रेण, दुष्ट-शत्रु-प्रमर्दिताः ॥ ॥२५॥

ॐ संतापिनि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् संतापय-संतापय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ संहारिणि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् संहारय-संहारय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ रौद्री स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् रौद्रय-रौद्रय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ भ्रामिणि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् भ्रामय-भ्रामय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ जृम्भिणि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् जृम्भय-जृम्भय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ द्राविणि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् द्रावय-द्रावय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ क्षोभिणि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् क्षोभय-क्षोभय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ मोहिनि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् मोहय-मोहय हूं फट् स्वाहा ।  
 ॐ स्तम्भिनि स्फ्रे स्फ्रे मम सपरिवारकस्य शत्रून् स्तम्भय-स्तम्भय हूं फट् स्वाहा ।

- फल-श्रुति शृणोति य इमां विद्यां, शृणोति च सदाऽपि ताम् ।  
 यावत् कृत्यादि-शत्रूणां, तत्क्षणादेव नश्यति ॥ ॥ १ ॥
- मारणं शत्रु-वर्गाणां, रक्षणाय चात्म-परम् ।  
 आयुर्वृद्धिर्यशो-वृद्धिस्तेजो-वृद्धि स्तथैव च ॥ ॥ २ ॥
- कुबेर इव वित्ताढ्यः, सर्व-सौख्यमवाप्नुयात् ।  
 वाय्वादीनामुपशमं, विषम-ज्वर-नाशनम् ॥ ॥ ३ ॥
- पर-वित्त-हरा सा वै, पर-प्राण-हरा तथा ।  
 पर-क्षोभादिक-करा, तथा सम्पत्-करा शुभा ॥ ॥ ४ ॥
- स्मृति-मात्रेण देवेशि । शत्रु-वर्गाः लयं गताः ।  
 इदं सत्यमिदं सत्यं, दुर्लभा देवतैरपि ॥ ॥ ५ ॥
- शठाय पर-शिष्याय, न प्रकाश्या कदाचन ।  
 पुत्राय भक्ति-युक्ताय, स्व-शिष्याय तपस्विने ।  
 प्रदातव्या महा-विद्या, चात्म-वर्ग-प्रदायतः ॥ ॥ ६ ॥

- विना ध्यानैर्विना जापैर्वना पूजा-विधानतः ।  
विना षोढा विना ज्ञानैर्मोक्ष-सिद्धिः प्रजायते ॥ ॥ ७ ॥
- पर-नारी-हरा विद्या, पर-रूप-हरा तथा ।  
वायु-चन्द्र-स्तम्भ-करा, मैथुनानन्द-संयुता ॥ ॥ ८ ॥
- त्रि-सन्ध्यमेक-सन्ध्यं वा, यः पठेद्भक्तितः सदा ।  
सत्यं वदामि देवेशि मम कोटि-समो भवेत् ॥ ॥ ९ ॥
- क्रोधादेव-गणाः सर्वे, लयं यास्यन्ति निश्चितम् ।  
किं पुनर्मानवा देवि भूत-प्रेतादयो मृताः ॥ ॥ १० ॥
- विपरीत-समा विद्या, न भूता न भविष्यति ।  
पठनान्ते पर-ब्रह्म-विद्यां स-भास्करां तथा ।  
मातृकां पुटितं देवि, दशधा प्रजपेत् सुधीः ॥ ॥ ११ ॥
- वेदादि-पुटिका देवि, मातृकाऽनन्त-रुपिणी ।  
तया हि पुटितां विद्यां, प्रजपेत् साधकोत्तमः ॥ ॥ १२ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं  
गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ ॐ  
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत परब्रह्म महाप्रत्यंगिरा ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं  
ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं  
बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मम सपरिवारकस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरु-कुरु मरण  
भयापन पापनय त्रिजगतां पररूपवित्तायुर्मे सपरिवारकाय देहि-देहि दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च  
सततं देहि-देहि विश्वरूपे धनं पुत्रान् देहि-देहि मां सपरिवारकस्य मां पश्येत्तु देहिनः सर्वे हिंसकाः  
प्रलयं यान्तु मम सपरिवारकस्य शत्रूणां बलबुद्धिहानिं कुरु-कुरु तान् स-सहायान् स्वेष्ट-देवतान्  
संहारय-संहारय स्वाचारमपनयाऽपनय ब्रह्मास्त्रादीनि व्यर्थीकुरु हूं हूं स्फ्रें स्फ्रें ठः ठः फट् फट् ॐ

- मनो जित्वा जपेल्लोकं, भोग रोगं तथा यजेत् ।  
दीनतां हीनतां जित्वा, कामिनी निर्वाण-पद्धतिम् ॥ ॥ १३ ॥

॥ इति श्री महा-विपरीत-प्रत्यंगिरा-स्तोत्रम् ॥



## ॥ श्री बगलामुखी चालीसा ॥

■ नमो महाविधा बरदा , बगलामुखी दयाल ।  
स्तम्भन क्षण में करे , सुमरित अरिकुल काल ॥

- |  |        |  |        |
|--|--------|--|--------|
| ■ नमो नमो पीताम्बरा भवानी,<br>बगलामुखी नमो कल्याणी ॥         | ॥ १ ॥  | ■ दुष्टोच्चाटन कारक माता,<br>अरि जिह्वा कीलक सघाता ॥           | ॥ १३ ॥ |
| ■ भक्त वत्सला शत्रु नशानी,<br>नमो महाविधा वरदानी ॥           | ॥ २ ॥  | ■ साधक के विपति की त्राता,<br>नमो महामाया प्रख्याता ॥          | ॥ १४ ॥ |
| ■ अमृत सागर बीच तुम्हारा,<br>रत्न जड़ित मणि मंडित प्यारा ॥   | ॥ ३ ॥  | ■ मुद्गर शिला लिये अति भारी,<br>प्रेतासन पर किये सवारी ॥       | ॥ १५ ॥ |
| ■ स्वर्ण सिंहासन पर आसीना,<br>पीताम्बर अति दिव्य नवीना ॥     | ॥ ४ ॥  | ■ तीन लोक दस दिशा भवानी,<br>बिचरहु तुम हित कल्याणी ॥           | ॥ १६ ॥ |
| ■ स्वर्णभूषण सुन्दर धारे,<br>सिर पर चन्द्र मुकुट श्रृंगारे ॥ | ॥ ५ ॥  | ■ अरि अरिष्ट सोचे जो जन को,<br>बुद्धि नाशकर कीलक तन को ॥       | ॥ १७ ॥ |
| ■ तीन नेत्र दो भुजा मृणाला,<br>धारे मुद्गर पाश कराला ॥       | ॥ ६ ॥  | ■ हाथ पांव बाँधहु तुम ताके,<br>हनहु जीभ बिच मुद्गर बाके ॥      | ॥ १८ ॥ |
| ■ भैरव करे सदा सेवकाई,<br>सिद्ध काम सब विघ्न नसाई ॥          | ॥ ७ ॥  | ■ चोरो का जब संकट आवे,<br>रण में रिपुओं से घिर जावे ॥          | ॥ १९ ॥ |
| ■ तुम हताश का निपट सहारा,<br>करे अकिंचन अरिकल धारा ॥         | ॥ ८ ॥  | ■ अनल अनिल बिप्लव घहरावे,<br>वाद विवाद न निर्णय पावे ॥         | ॥ २० ॥ |
| ■ तुम काली तारा भुवनेशी,<br>त्रिपुर सुन्दरी भैरवी वेशी ॥     | ॥ ९ ॥  | ■ मूठ आदि अभिचारण संकट,<br>राजभीति आपत्ति सन्निकट ॥            | ॥ २१ ॥ |
| ■ छिन्नभाल धूमा मातंगी,<br>गायत्री तुम बगला रंगी ॥           | ॥ १० ॥ | ■ ध्यान करत सब कष्ट नसावे,<br>भूत प्रेत न बाधा आवे ॥           | ॥ २२ ॥ |
| ■ सकल शक्तियाँ तुम में साजें,<br>हैं बीज के बीज बिराजे ॥     | ॥ ११ ॥ | ■ सुमरित राजव्दार बंध जावे,<br>सभा बीच स्तम्भवन छावे ॥         | ॥ २३ ॥ |
| ■ दुष्ट स्तम्भन अरिकुल कीलन,<br>मारण वशीकरण सम्मोहन ॥        | ॥ १२ ॥ | ■ नाग सर्प ब्रर्चिश्रकादि भयंकर,<br>खल विहंग भागहिं सब सत्वर ॥ | ॥ २४ ॥ |



**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

- |  |      |  |      |
|--|------|--|------|
| ■ सर्व रोग की नाशन हारी,<br>अरिकुल मूलच्चाटन कारी ॥            | ॥२५॥ | ■ पूजा विधि नहिं जानत तुम्हरी,<br>अर्थ न आखर करहूँ निहोरी ॥  | ॥३३॥ |
| ■ स्त्री पुरुष राज सम्मोहक,<br>नमो नमो पीताम्बर सोहक ॥         | ॥२६॥ | ■ मैं कुपुत्र अति निवल उपाया,<br>हाथ जोड़ शरणागत आया ॥       | ॥३४॥ |
| ■ तुमको सदा कुबेर मनावे,<br>श्री समृद्धि सुयश नित गावें ॥      | ॥२७॥ | ■ जग में केवल तुम्हीं सहारा,<br>सारे संकट करहुँ निवारा ॥     | ॥३५॥ |
| ■ शक्ति शौर्य की तुम्हीं विधाता,<br>दुःख दारिद्र विनाशक माता ॥ | ॥२८॥ | ■ नमो महादेवी हे माता,<br>पीताम्बरा नमो सुखदाता ॥            | ॥३६॥ |
| ■ यश ऐश्वर्य सिद्धि की दाता,<br>शत्रु नाशिनी विजय प्रदाता ॥    | ॥२९॥ | ■ सोम्य रूप धर बनती माता,<br>सुख सम्पत्ति सुयश की दाता ॥     | ॥३७॥ |
| ■ पीताम्बरा नमो कल्याणी,<br>नमो माता बगला महारानी ॥            | ॥३०॥ | ■ रोद्र रूप धर शत्रु संहारो,<br>अरि जिह्वा में मुद्गर मारो ॥ | ॥३८॥ |
| ■ जो तुमको सुमरै चितलाई,<br>योग क्षेम से करो सहाई ॥            | ॥३१॥ | ■ नमो महाविधा आगारा,<br>आदि शक्ति सुन्दरी आपारा ॥            | ॥३९॥ |
| ■ आपत्ति जन की तुरत निवारो,<br>आधि व्याधि संकट सब टारो ॥       | ॥३२॥ | ■ अरि भंजक विपत्ति की त्राता,<br>दया करो पीताम्बरी माता ॥    | ॥४०॥ |

- रिद्धि सिद्धि दाता तुम्हीं, अरि समूल कुल काल ।  
मेरी सब बाधा हरो, माँ बगले तत्काल ॥

॥ इति श्री बगलामुखी चालीसा पाठ सम्पूर्णम् ॥